श्री मातंगी सहस्रनाम स्तोत्रं

श्री मातंगी सहस्रनाम स्तोत्रं

ईश्वर उवाच |
शृणु देवि प्रवक्ष्यामि सांप्रतं तत्त्वतः परं |
नाम्नां सहस्रं परमं सुमुख्याः सिद्धये हितं || 1 ||

सहस्रनामपाठी यः सर्वत्र विजयी भवेत् |
पराभवो न तस्यास्ति सभायां वा महारणे || 2 ||

यथा तुष्टा भवेद्देवी सुमुखी चास्य पाठतः |
तथा भवति देवेशि साधकः शिव एव सः || 3 ||

अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयस्य कोटयः |
सकृत्पाठेन जायंते प्रसन्ना सुमुखी भवेत् || 4 ||

मतंगोऽस्य ऋषिश्छंदोऽनुष्टुब्देवी समीरिता |
सुमुखी विनियोगः स्यात्सर्वसंपत्तिहेतवे |
एवं ध्यात्वा पठेदेतद्यदीच्छेत्सिद्धिमात्मनः || 5 ||

ध्यानं |
देवीं षोडशवार्षिकीं शवगतां माध्वीरसाघूर्णितां
श्यामांगीमरुणांबरां पृथुकुचां गुंजावलीशोभितां |
हस्ताभ्यां दधतीं कपालममलं तीक्ष्णां तथा कर्त्रिकां
ध्यायेन्मानसपंकजे भगवतीमुच्छिष्टचांडालिनीं || 1 ||

स्तोत्रं |
ॐ सुमुखी शेमुषी सेव्या सुरसा शशिशेखरा |
समानास्या साधनी च समस्तसुरसम्मुखी || 2 ||

सर्वसंपत्तिजननी संपदा सिंधुसेविनी |
शंभुसीमंतिनी सौम्या समाराध्या सुधारसा || 3 ||

सारंगा सवली वेला लावण्यवनमालिनी |
वनजाक्षी वनचरी वनी वनविनोदिनी || 4 ||

वेगिनी वेगदा वेगा बगलस्था बलाधिका |
काली कालप्रिया केली कमला कालकामिनी || 5 ||

कमला कमलस्था च कमलस्था कलावती |
कुलीना कुटिला कांता कोकिला कलभाषिणी || 6 ||

कीरा केलिकरा काली कपालिन्यपि कालिका |
केशिनी च कुशावर्ता कौशांभी केशवप्रिया || 7 ||

काली काशी महाकालसंकाशा केशदायिनी |
कुंडला च कुलस्था च कुंडलांगदमंडिता || 8 ||

कुंडपद्मा कुमुदिनी कुमुदप्रीतिवर्धिनी |
कुंडप्रिया कुंडरुचिः कुरंगनयनाकुला || 9 ||

कुंदबिंबालिनदिनी कुसुंभकुसुमाकरा |
कांची कनकशोभाढ्या क्वणत्किंकिणिकाकटिः || 10 ||

कठोरकरणा काष्ठा कौमुदी कंडवत्यपि |
कपर्दिनी कपटिनी कठिनी कलकंडिनी || 11 ||

कीरहस्ता कुमारी च कुरूढकुसुमप्रिया |
कुंजरस्था कुजरता कुंभी कुंभस्तनी कला || 12 ||

कुंभीकांगा करभोरूः कदलीकुशशायिनी |
कुपिता कोटरस्था च कंकाली कंदलालया || 13 ||

कपालवासिनी केशी कंपमानशिरोरुहा |
कादंबरी कदंबस्था कुंकुमप्रेमधारिणी || 14 ||

कुटुंबिनी कृपायुक्ता क्रतुः क्रतुकरप्रिया |
कात्यायनी कृत्तिका च कार्तिकी कुशवर्तिनी || 15 ||

कामपत्नी कामदात्री कामेशी कामवंदिता |
कामरूपा कामरतिः कामाख्या ज्ञानमोहिनी || 16 ||

खड्गिनी खेचरी खंजा खंजरीटेक्षणा खगा |
खरगा खरनादा च खरस्था खेलनप्रिया || 17 ||

खरांशुः खेलिनी खट्वा खरा खट्वांगधारिणी |
खरखंडिन्यपि ख्यातिः खंडिता खंडनप्रिया || 18 ||

खंडप्रिया खंडखाद्या खंडसिंधुश्च खंडिनी |
गंगा गोदावरी गौरी गौतम्यपि च गोमती || 19 ||

गंगा गया गगनगा गारुडी गरुडध्वजा |
गीता गीतप्रिया गेया गुणप्रीतिर्गुरुर्गिरी || 20 ||

गौर्गौरी गंडसदना गोकुला गोप्रतारिणी |
गोप्ता गोविंदिनी गूढा गूढविग्रस्तगुंजिनी || 21 ||

गजगा गोपिनी गोपी गोक्षा जयप्रिया गणा |
गिरिभूपालदुहिता गोगा गोकुलवासिनी || 22 ||

घनस्तनी घनरुचिर्घनोरुर्घननिःस्वना |
घुंकारिणी घुक्षकरी घूघूकपरिवारिता || 23 ||

घंटानादप्रिया घंटा घोटा घोटकवाहिनी |
घोररूपा च घोरा च घृतप्रीतिर्घृतांजनी || 24 ||

घृताची घृतवृष्टिश्च घंटाघटघटावृता |
घटस्था घटना घातकरी घातनिवारिणी || 25 ||

चंचरीकी चकोरी च चामुंडा चीरधारिणी |
चातुरी चपला चंचुश्चिता चिंतामणिस्थिता || 26 ||

चातुर्वर्ण्यमयी चंचुश्चोराचार्या चमत्कृतिः |
चक्रवर्तिवधूश्चित्रा चक्रांगी चक्रमोदिनी || 27 ||

चेतश्चरी चित्तवृत्तिश्चेतना चेतनप्रिया |
चापिनी चंपकप्रीतिश्चंडा चंडालवासिनी || 28 ||

चिरंजीविनी तच्चित्ता चिंचामूलनिवासिनी |
छुरिका छत्रमध्यस्था छिंदा छिंदकरी छिदा || 29 ||

छुच्छुंदरी छलप्रीतिश्छुच्छुंदरिनिभस्वना |
छलिनी छत्रदा छिन्ना छिंटिच्छेदकरी छटा || 30 ||

छद्मिनी छांदसी छाया छरुच्छंदकरीत्यपि |
जयदाजयदा जाती जायिनी जामला जतुः || 31 ||

जंबूप्रिया जीवनस्था जंगमा जंगमप्रिया |
जपापुष्पप्रिया जप्या जगज्जीवा जगज्जनिः || 32 ||

जगज्जंतुप्रधाना च जगज्जीवपरा जवा |
जातिप्रिया जीवनस्था जीमूतसदृशीरुचिः || 33 ||

जन्या जनहिता जाया जन्मभूर्जंभसी जभूः |
जयदा जगदावासा जायिनी ज्वरकृच्छ्रजित् || 34 ||

जपा च जपती जप्या जपार्हा जायिनी जना |
जालंधरमयी जानुर्जालौका जाप्यभूषणा || 35 ||

जगज्जीवमयी जीवा जरत्कारुर्जनप्रिया |
जगतीजननिरता जगच्छोभाकरी जवा || 36 ||

जगतीत्राणकृज्जंघा जातीफलविनोदिनी |
जातीपुष्पप्रिया ज्वाला जातिहा जातिरूपिणी || 37 ||

जीमूतवाहनरुचिर्जीमूता जीर्णवस्त्रकृत् |
जीर्णवस्त्रधरा जीर्णा ज्वलती जालनाशिनी || 38 ||

जगत्क्षोभकरी जातिर्जगत्क्षोभविनाशिनी |
जनापवादा जीवा च जननीगृहवासिनी || 39 ||

जनानुरागा जानुस्था जलवासा जलार्तिकृत् |
जलजा जलवेला च जलचक्रनिवासिनी || 40 ||

जलमुक्ता जलारोहा जलसा जलजेक्षणा |
जलप्रिया जलौका च जलशोभावती तथा || 41 ||

जलविस्फूर्जितवपुर्ज्वलत्पावकशोभिनी |
झिंझा झिल्लमयी झिंझाझणत्कारकरी जया || 42 ||

झंझी झंपकरी झंपा झंपत्रासनिवारिणी |
टंकारस्था टंककरी टंकारकरणांहसा || 43 ||

टंकारोट्टकृतष्ठीवा डिंडीरवसनावृता |
डाकिनी डामरी चैव डिंडिमध्वनिनादिनी || 44 ||

डकारनिःस्वनरुचिस्तपिनी तापिनी तथा |
तरुणी तुंदिला तुंदा तामसी च तमःप्रिया || 45 ||

ताम्रा ताम्रवती तंतुस्तुंदिला तुलसंभवा |
तुलाकोटिसुवेगा च तुल्यकामा तुलाश्रया || 46 ||

तुदनी तुननी तुंबी तुलाकाला तुलाश्रवा |
तुमुला तुलजा तुल्या तुलादानकरी तथा || 47 ||

तुल्यवेगा तुल्यगतिस्तुलाकोटिनिनादिनी |
ताम्रोष्ठा ताम्रपर्णी च तमःसंक्षोभकारिणी || 48 ||

त्वरिता ज्वरहा तीरा तारकेशी तमालिनी |
तमोदानवती ताम्रतालस्थानवती तमी || 49 ||

तामसी च तमिस्रा च तीव्रा तीव्रपराक्रमा |
तटस्था तिलतैलाक्ता तरुणी तपनद्युतिः || 50 ||

तिलोत्तमा च तिलकृत्तारकाधीशशेखरा |
तिलपुष्पप्रिया तारा तारकेशी कुटुंबिनी || 51 ||

स्थाणुपत्नी स्थिरकरी स्थूलसंपद्विवर्धिनी |
स्थितिः स्थैर्यस्थविष्ठा च स्थपतिः स्थूलविग्रहा || 52 ||

स्थूलस्थलवती स्थाली स्थलसंगविवर्धिनी |
दंडिनी दंतिनी दामा दरिद्रा दीनवत्सला || 53 ||

देवी देववधूर्दित्या दामिनी देवभूषणा |
दया दमवती दीनवत्सला दाडिमस्तनी || 54 ||

देवमूर्तिकरा दैत्या दारिणी देवतानता |
दोलाक्रीडा दयालुश्च दंपती देवतामयी || 55 ||

दशादीपस्थिता दोषा दोषहा दोषकारिणी |
दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गम्या दुर्गवासिनी || 56 ||

दुर्गंधनाशिनी दुःस्था दुःखप्रशमकारिणी |
दुर्गंधा दुंदुभिध्वांता दूरस्था दूरवासिनी || 57 ||

दरदा दरदात्री च दुर्व्याधदयिता दमी |
धुरंधरा धुरीणा च धौरेयी धनदायिनी || 58 ||

धीरारवा धरित्री च धर्मदा धीरमानसा |
धनुर्धरा च धमनी धमनीधूर्तविग्रहा || 59 ||

धूम्रवर्णा धूम्रपाना धूमला धूममोदिनी |
नंदिनीनंदिनी नंदा नंदिनी नंदबालिका || 60 ||

नवीना नर्मदा नर्मनमिर्नियमनिःस्वना |
निर्मला निगमाधारा निम्नगा नग्नकामिनी || 61 ||

नीला निरत्ना निर्वाणा निर्लोभा निर्गुणा नतिः |
नीलग्रीवा निरीहा च निरंजनजनानवा || 62 ||

निर्गुंडिका च निर्गुंडा निर्नासा नासिकाभिधा |
पताकिनी पताका च पत्रप्रीतिः पयस्विनी || 63 ||

पीना पीनस्तनी पत्नी पवनाशा निशामयी |
परा परपरा काली पारकृत्यभुजप्रिया || 64 ||

पवनस्था च पवना पवनप्रीतिवर्धिनी |
पशुवृद्धिकरी पुष्पपोषिका पुष्टिवर्धिनी || 65 ||

पुष्पिणी पुस्तककरा पूर्णिमाऽतलवासिनी |
पेशी पाशकरी पाशा पांशुहा पांशुला पशुः || 66 ||

पटुः पराशा परशुधारिणी पाशिनी तथा |
पापघ्नी पतिपत्नी च पतिता पतितापनी || 67 ||

पिशाची च पिशाचघ्नी पिशिताशनतोषिणी |
पानदा पानपात्री च पानदानकरोद्यता || 68 ||

पेया प्रसिद्धा पीयूषा पूर्णा पूर्णमनोरथा |
पतंगाभा पतंगा च पौनःपुन्यमिवापरा || 69 ||

पंकिला पंकमग्ना च पानीया पंजरस्थिता |
पंचमी पंचयज्ञा च पंचता पंचमप्रिया || 70 ||

पिचुमंदा पुंडरीका पिकी पिंगललोचना |
प्रियंगुमंजरी पिंडी पंडिता पांडुरप्रभा || 71 ||

प्रेतासना प्रियालस्था पांडुघ्नी पीनसापहा |
फलिनी फलदात्री च फलश्रीः फलभूषणा || 72 ||

फूत्कारकारिणी स्फारी फुल्ला फुल्लांबुजानना |
स्फुलिंगहा स्फीतमतिः स्फीतकीर्तिकरी तथा || 73 ||

बलमाया बलारातिर्बलिनी बलवर्धिनी |
वेणुवाद्या वनचरी विरंचिजनयित्र्यपि || 74 ||

विद्याप्रदा महाविद्या बोधिनी बोधदायिनी |
बुद्धमाता च बुद्धा च वनमालावती वरा || 75 ||

वरदा वारुणी वीणा वीणावादनतत्परा |
विनोदिनी विनोदस्था वैष्णवी विष्णुवल्लभा || 76 ||

वैद्या वैद्यचिकित्सा च विवशा विश्वविश्रुता |
विद्यौघविह्वला वेला वित्तदा विगतज्वरा || 77 ||

विरावा विवरीकारा बिंबोष्ठी बिंबवत्सला |
विंध्यस्था वरवंद्या च वीरस्थानवरा च वित् || 78 ||

वेदांतवेद्या विजया विजया विजयप्रदा |
विरोगीवंदिनी वंध्या वंद्यबंधनिवारिणी || 79 ||

भगिनी भगमाला च भवानी भवनाशिनी |
भीमा भीमाननाभीमा भंगुरा भीमदर्शना || 80 ||

भिल्ली भिल्लधरा भीरुर्भरुंडा भीर्भयावहा |
भगसर्पिण्यपि भगा भगरूपा भगालया || 81 ||

भगासना भगाभोगा भेरीझंकाररंजिता |
भीषणा भीषणारावा भगवत्यहिभूषणा || 82 ||

भारद्वाजा भोगदात्री भूतिघ्नी भूतिभूषणा |
भूमिदा भूमिदात्री च भूपतिर्भरदायिनी || 83 ||

भ्रमरी भ्रामरी भाला भूपालकुलसंस्थिता |
माता मनोहरा माया मानिनी मोहिनी मही || 84 ||

महालक्ष्मीर्मदक्षीबा मदिरा मदिरालया |
मदोद्धता मतंगस्था माधवी मधुमर्दिनी || 85 ||

मोदा मोदकरी मेधा मेध्या मध्याधिपस्थिता |
मद्यपा मांसलोमस्था मोदिनी मैथुनोद्यता || 86 ||

मूर्धावती महामाया मायामहिममंदिरा |
महामाला महाविद्या महामारी महेश्वरी || 87 ||

महादेववधूर्मान्या मथुरा मेरुमंडिता |
मेदस्विनी मिलिंदाक्षी महिषासुरमर्दिनी || 88 ||

मंडलस्था भगस्था च मदिरारागगर्विता |
मोक्षदा मुंडमाला च माला मालाविलासिनी || 89 ||

मातंगिनी च मातंगी मातंगतनयापि च |
मधुस्रवा मधुरसा बंधूककुसुमप्रिया || 90 ||

यामिनी यामिनीनाथभूषा यावकरंजिता |
यवांकुरप्रिया यामा यवनी यवनार्दिनी || 91 ||

यमघ्नी यमकल्पा च यजमानस्वरूपिणी |
यज्ञा यज्ञयजुर्यक्षी यशोनिष्कंपकारिणी || 92 ||

यक्षिणी यक्षजननी यशोदायासधारिणी |
यशःसूत्रपदा यामा यज्ञकर्मकरीत्यपि || 93 ||

यशस्विनी यकारस्था यूपस्तंभनिवासिनी |
रंजिता राजपत्नी च रमा रेखा रवीरणा || 94 ||

रजोवती रजश्चित्रा रंजनी रजनीपतिः |
रोगिणी रजनी राज्ञो राज्यदा राज्यवर्धिनी || 95 ||

राजन्वती राजनीतिस्तथा रजतवासिनी |
रमणी रमणीया च रामा रामावती रतिः || 96 ||

रेतोरती रतोत्साहा रोगघ्नी रोगकारिणी |
रंगा रंगवती रागा रागज्ञा रागकृद्द्या || 97 ||

रामिका रजकी रेवा रजनी रंगलोचना |
रक्तचर्मधरा रंगी रंगस्था रंगवाहिनी || 98 ||

रमा रंभाफलप्रीती रंभोरू राघवप्रिया |
रंगा रंगांगमधुरा रोदसी च महारवा || 99 ||

रोगकृद्रोगहंत्री च रोगभृद्रोगस्राविणी |
वंदी वंदिस्तुता बंधुर्बंधूककुसुमाधरा || 100 ||

वंदिता वंद्यमाना च वैद्रावी वेदविद्विधा |
विकोपा विकपाला च विकस्था विंकवत्सला || 101 ||

वेदिर्विलग्नलग्ना च विधिविंककरी विधा |
शंखिनी शंखवलया शंखमालावती शमी || 102 ||

शंखपात्राशिनी शंखस्वना शंखगला शशी |
शबरी शांबरी शंभुः शंभुकेशा शरासिनी || 103 ||

शवा श्येनवती श्यामा श्यामांगी श्यामलोचना |
श्मशानस्था श्मशाना च श्मशानस्थानभूषणा || 104 ||

शमदा शमहंत्री च शंखिनी शंखरोषणा |
शांतिः शांतिप्रदा शेषा शेषाख्या शेषशायिनी || 105 ||

शेमुषी शोषिणी शेषा शौर्या शौर्यशरा शरी |
शापदा शापहा शापा शापपंथाः सदाशिवा || 106 ||

शृंगिणी शृंगिपलभुक् शंकरी शांकरी शिवा |
शवस्था शवभुक् शांता शवकर्णा शवोदरी || 107 ||

शाविनी शवशिंशाश्रीः शवा च शवशायिनी |
शवकुंडलिनी शैवा शीकरा शिशिराशना || 108 ||

शवकांची शवश्रीका शवमाला शवाकृतिः |
स्रवंती संकुचा शक्तिः शंतनुः शवदायिनी || 109 ||

सिंधुः सरस्वती सिंधुः सुंदरी सुंदरानना |
साधुः सिद्धिप्रदात्री च सिद्धा सिद्धसरस्वती || 110 ||

संततिः संपदा संविच्छंकिसंपत्तिदायिनी |
सपत्नी सरसा सारा सारस्वतकरी सुधा || 111 ||

सुरा समांसाशना च समाराध्या समस्तदा |
समधीः सामदा सीमा सम्मोहा समदर्शना || 112 ||

सामतिः सामदा सीमा सावित्री सविधा सती |
सवना सवनासारा सवरा सावरा समी || 113 ||

सिमरा सतता साध्वी सध्रीची ससहायिनी |
हंसी हंसगतिर्हंसी हंसोज्ज्वलनिचोलयुक् || 114 ||

हलिनी हालिनी हाला हलश्रीर्हरवल्लभा |
हला हलवती ह्येषा हेला हर्षविवर्धिनी || 115 ||

हंतिर्हंता हया हाहाहताऽहंतातिकारिणी |
हंकारी हंकृतिर्हंका हीहीहाहाहिता हिता || 116 ||

हीतिर्हेमप्रदा हाराराविणी हरिसम्मता |
होरा होत्री होलिका च होमा होमहविर्हविः || 117 ||

हरिणी हरिणीनेत्रा हिमाचलनिवासिनी |
लंबोदरी लंबकर्णा लंबिका लंबविग्रहा || 118 ||

लीला लीलावती लोला ललना ललिता लता |
ललामलोचना लोभ्या लोलाक्षी सत्कुलालया || 119 ||

लपत्नी लपती लम्या लोपामुद्रा ललंतिका |
लतिका लंघिनी लंघा लालिमा लघुमध्यमा || 120 ||

लघीयसी लघूदर्या लूता लूताविनाशिनी |
लोमशा लोमलंबी च ललंती च लुलुंपती || 121 ||

लुलायस्था च लहरी लंकापुरपुरंदरा |
लक्ष्मीर्लक्ष्मीप्रदा लभ्या लाक्षाक्षी लुलितप्रभा || 122 ||

क्षणा क्षणक्षुः क्षुत्क्षिणी क्षमा क्षांतिः क्षमावती |
क्षामा क्षामोदरी क्षेम्या क्षौमभृत्क्षत्रियांगना || 123 ||

क्षया क्षयाकरी क्षीरा क्षीरदा क्षीरसागरा |
क्षेमंकरी क्षयकरी क्षयकृत्क्षयदा क्षतिः || 124 ||

क्षुद्रिकाऽक्षुद्रिका क्षुद्रा क्षुत्क्षमा क्षीणपातका |
मातुः सहस्रनामेदं सुमुख्याः सिद्धिदायकं || 125 ||

यः पठेत्प्रयतो नित्यं स एव स्यान्महेश्वरः |
अनाचारात्पठेन्नित्यं दरिद्रो धनवान्भवेत् || 126 ||

मूकः स्याद्वाक्पतिर्देवि रोगी नीरोगतां व्रजेत् |
पुत्रार्थी पुत्रमाप्नोति त्रिषु लोकेषु विश्रुतं || 127 ||

वंध्यापि सूते सत्पुत्रं विदुषः सदृशं गुरोः |
सत्यं च बहुधा भूयाद्गावश्च बहुदुग्धदाः || 128 ||

राजानः पादनम्राः स्युस्तस्य हासा इव स्फुटाः |
अरयः संक्षयं यांति मानसा संस्मृता अपि || 129 ||

दर्शनादेव जायंते नरा नार्योऽपि तद्वशाः |
कर्ता हर्ता स्वयं वीरो जायते नात्र संशयः || 130 ||

यं यं कामयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितं |
दुरितं न च तस्यास्ति नास्ति शोकः कथंचन || 131 ||

चतुष्पथेऽर्धरात्रे च यः पठेत्साधकोत्तमः |
एकाकी निर्भयो वीरो दशवारं स्तवोत्तमं || 132 ||

मनसा चिंतितं कार्यं तस्य सिद्ध्येन्न संशयः |
विना सहस्रनाम्नां यो जपेन्मंत्रं कदाचन || 133 ||

न सिद्धिर्जायते तस्य कल्पकोटिशतैरपि |
कुजवारे श्मशाने वा मध्याह्ने यो जपेत्सदा || 134 ||

कृतकृत्यः स जायेत कर्ता हर्ता नृणामिह |
रोगार्तोऽर्धनिशायां यः पठेदासनसंस्थितः || 135 ||

सद्यो नीरोगतामेति यदि स्यान्निर्भयस्तदा |
अर्धरात्रे श्मशाने वा शनिवारे जपेन्मनुं || 136 ||

अष्टोत्तरसहस्रं तु दशवारं जपेत्ततः |
सहस्रनाम चैतद्धि तदा याति स्वयं शिवा || 137 ||

महापवनरूपेण घोरगोमायुनादिनी |
ततो यदि न भीतिः स्यात्तदा देहीति वाग्भवेत् || 138 ||

तदा पशुबलिं दद्यात्स्वयं गृह्णाति चंडिका |
यथेष्टं च वरं दत्त्वा प्रयाति सुमुखी शिवा || 139 ||

रोचनागुरुकस्तूरीकर्पूरैश्च सचंदनैः |
कुंकुमेन दिने श्रेष्ठे लिखित्वा भूर्जपत्रके || 140 ||

शुभनक्षत्रयोगे च कृतमारुतसत्क्रियः |
कृत्वा संपातनविधिं धारयेद्दक्षिणे करे || 141 ||

सहस्रनाम स्वर्णस्थं कंठे वा विजितेंद्रियः |
तदा यं प्रणमेन्मंत्री क्रुद्धः स म्रियते नरः || 142 ||

दुष्टश्वापदजंतूनां न भीः कुत्रापि जायते |
बालकानामियं रक्षा गर्भिणीनामपि प्रिये || 143 ||

मोहनस्तंभनाकर्षमारणोच्चाटनानि च |
यंत्रधारणतो नूनं जायंते साधकस्य तु || 144 ||

नीलवस्त्रे विलिख्यैतत्तद्ध्वजे स्थापयेद्यदि |
तदा नष्टा भवत्येव प्रचंडाप्यरिवाहिनी || 145 ||

एतज्जप्तं महाभस्म ललाटे यदि धारयेत् |
तद्विलोकन एव स्युः प्राणिनस्तस्य किंकराः || 146 ||

राजपत्न्योऽपि विवशाः किमन्याः पुरयोषितः |
एतज्जप्तं पिबेत्तोयं मासेन स्यान्महाकविः || 147 ||

पंडितश्च महावादी जायते नात्र संशयः |
अयुतं च पठेत् स्तोत्रं पुरश्चरणसिद्धये || 148 ||

दशांशं कमलैर्हुत्वा त्रिमध्वक्तैर्विधानतः |
स्वयमायाति कमला वाण्या सह तदालये || 149 ||

मंत्रो निष्कीलतामात सुमुखी सुमुखी भवेत् |
अनंतं च भवेत्पुण्यमपुण्यं च क्षयं व्रजेत् || 150 ||

पुष्करादिषु तीर्थेषु स्नानतो यत्फलं भवेत् |
तत्फलं लभते जंतुः सुमुख्याः स्तोत्रपाठतः || 151 ||

एतदुक्तं रहस्यं ते स्वसर्वस्वं वरानने |
न प्रकाश्यं त्वया देवि यदि सिद्धिं त्वमिच्छसि || 152 ||

प्रकाशनादसिद्धिः स्यात्कुपिता सुमुखी भवेत् |
नातः परतरं लोके सिद्धिदं प्राणिनामिह || 153 ||

वंदे श्रीसुमुखीं प्रसन्नवदनां पूर्णेंदुबिंबाननां
सिंदूरांकितमस्तकां मधुमदोल्लोलां च मुक्तावलीं |
श्यामां कज्जलिकाकरां करगतं चाध्यापयंतीं शुकं
गुंजापुंजविभूषणां सकरुणामामुक्तवेणीलतां || 154 ||

इति श्रीनंद्यावर्ततंत्रे उत्तरखंडे मातंगी सहस्रनाम स्तोत्रं ||